PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

नवम्बर 2006 ISSUE 1106 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज लैटर

पवित्र जपमाला की भक्ति करे आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि

अक्टूबर का महीना जपमाला की रानी माँ मरियम को समर्पित है। मुख्य पर्व अक्टूबर 7 को मनाया जाता है जहाँ कलीसिया इस विश्वास का बखान करती है कि माँ मरियम कलीसिया की माँ और संरक्षिका है। पहले इस दिन को माँ मरियम– विजयी की रानी के रूप में मनाया जाता था।

पवित्र माला का जपना माँ की ममता, आश्रय व मध्यस्थता का अनुभव दिलाती है। पवित्र माला एक तरफ एक गूढ़ एवं अर्थपूर्ण प्रार्थना का रुप है और दूसरी तरफ एक सरल व व्यवहार में लाने योग्य सुन्दर प्रार्थना है जिसमें हमारे मुक्ति इतिहास का सारांश छिपा है। इसके रहस्यों पर मनन करना रक्रीस्तीय जीवन के काल चक्र के रहस्यों का मनन करना है – मानव अवतार लेने से मानवजाति का उद्धार, उद्धार रक्रीस्त की शिक्षा, वचन, आज्ञा, दुःखभोग, मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा, वही येशु रक्रीस्त के द्वारा जो पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आये और माँ मरियम से जन्मे। जपमाला (रोज़री) हमारे जीवन का सार स्वरुप है – जिसमें खुशियाँ और गम, आँशाँए और उत्कण्ठाँए, सफलताँए एवं विफलताँए, सम्मान और अपमान, अत्याचार और महिमा इत्यादि के भाव उभरते हैं।

रोज़री एक सरल प्रार्थना है जिसे कोई भी, कभी भी, कहीं भी कर सकता है। चाहे वह धर्माध्यक्ष हो या सामान्य जन, धर्मशास्त्री हो या अज्ञानी और अनपढ़ हो, बूढ़ा हो या बच्चा, अमीर हो या गरीब, सभी जपमाला आसानी से एक समान जप सकते हैं। वह अकेले या समूह में, गिरिजाघर में या घर में या ऑफिस में, यात्रा करते वक्त या काम करते वक्त, प्रातः काल उठते ही या रात्रि सोने से पहले कभी भी, कहीं भी की जा सकती है। पर इसमें एक व्यक्ति पूर्ण रुप से खुद को शामिल कर लेता है–उँगलियाँ माला के मोतियों पर दौड़ती है, होंठों से प्रार्थनाँए निकलती हैं, दिमाग प्रत्येक भेद पर मनन करता है तथा हृदय उस रहस्य के द्वारा मिलने वाले संदेश का प्रत्युत्तर देता है। जपमाला आवृत्तियों से युक्त है, जो प्रेम की भाषा का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। ***"प्रणाम मरिया"***, ***"हे पिता हमारे"***, ***"पवित्र त्रित्व की स्तुति"***, ***"प्रेरितों का धर्मसार"***, ***"येशु से विनती"*** इत्यादि प्रार्थनाओं से गूँथी यह माला भक्तिभाव से करने पर ऊपर स्वर्ग तक माँ मरियम के हाथों में पहुँच जाती है जो हमारे निवेदनों को प्रभु येशु तक पहुँचा देती है।

पोप जॉन तेईसवें ने कहा था, "यह पवित्र जप माला सभी पुरोहितों व धर्मभाई–बहनों के दैनिक प्रार्थना का अंश बन जाये। उसी तरह प्रत्येक रक्रीस्तीय परिवार को पवित्र जपमाला को अपने जीवन का अभिन्न साथी बना लेना चाहिए।" यह प्रार्थना शान्ति, आश्वासन, धैर्य, सहनशक्ति, पवित्रता, विनम्रता, आज्ञाकारिता, प्रेम, आशा, विश्वास, इत्यादि गुणों को जागृत करता है। यह बात आजमाई हुई है कि कैसे पवित्र माला प्रतिदिन करने से आप को प्रलोभनों पर, बुराई पर विजय प्राप्त होती है क्योंकि आपकी **आध्यात्मिक शक्ति** जपमाला करने से बढ़ जाती है तथा आपको पवित्र माँ मरियम की मध्यस्थता व उनकी छत्रछाया का संरक्षण प्राप्त हो जाता है। शैतान को पैरों तले कुचलने वाली माँ को लाखों बार धन्यवाद जो हमें शैतान के हर षड्यंत्र व जाल से छुडा लेती है और हम बच्चों को स्वर्ग की ओर ऊपर उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाती है। पोप जॉन पॉल द्वितीय ने कहा था, "जीवन के हर क्षेत्र के भाईयों, बहनों, ईसाई परिवारों, रोगियों, बुजुर्गों, नौजवानों! मैं तुमसे कहता हूँ, विश्वास के साथ फिर जपमाला ले लो। पवित्र जपमाला के ज़रिए येशु के मुख का मनन करने से पिता के प्रेम में प्रज्वलित तथा पवित्र आत्मा की खुशी से भरपूर जीवन का रहस्य पाने

शेष भाग पृष्ठ 2 पर

मरियम, कृपाओं की माँ, से एक लघु विनती

कृपाओं की माता का तीर्थ स्थान– सरधना (मेरठ), उत्तरी भारत में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। सरधना में, माँ मरियम के भक्त लाखों की ताद्दाद में आते हैं। प्रतिवर्ष "जीवन–धाम" से भी नवम्बर के महीने में सरधना की तीर्थ यात्रा के लिए कई भक्त–जन बड़ी उत्सुकता व आनन्द से जाते हैं। नवम्बर के दूसरे रविवार अर्थात् पर्व दिवस के अवसर पर सर्वधिक भीड़ इकट्ठी हो जाती है। अपने आँचल की छत्रछाया में हमें रखकर अपने पुत्र की ओर हमें ले चलने वाली माँ से यह ***प्रार्थना करें***-

"हे अति पवित्र और निष्कलकं कुँवारी मरियम, समस्थ कृपाओं की मध्यस्था, तू हमारी सह–संरक्षिका और आशा है। हम तेरे पास आते हैं, हम ईश्वर को और तुझे सभी वरदानों के लिए धन्यवाद देते हैं। अपना प्रेम प्रकट करने के लिए, तुझसे प्रार्थना करने व तेरी सेवा करने के लिए हम आते हैं तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार सब लोगों को तेरे निकट लाने की प्रतिज्ञा करते हैं। हे ईश्वरीय कृपाओं की माता! हमें पाप के अवसरों पर विजय पाने की शक्ति, प्रभु येशु रक्रीस्त के प्रति पूर्ण प्रेम, पिता परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास और पवित्र मरण का वरदान प्रदान करने की कृपा कर जिससे हम सदा सर्वदा तेरे तथा पुत्र के साथ स्वर्ग में अनन्त काल तक निवास करें। आमेन।"

"जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, उसका अन्त में भला होगा, वह अपनी मृत्यु के दिन धन्य माना जायेगा।" (प्रवक्ता1:13)

पृष्ठ 1 का शेष भाग *के लिए हम समर्थ हो जाते हैं।"अतः हम जपमाला में चार प्रकार के भेदों का,* ***1) आनन्द के भेद, 2) प्रकाश के भेद, 3) दुःख के भेद*** *और* ***4) महिमा के भेद,*** *मनन कर हम प्रभु येशु के जीवन के हर पहलू पर ध्यान लगाते हैं और उसे अपना आदर्श मानते हैं। इस पवित्र जपमाला की रानी के पर्व के महीने में हर रोज़ जीवन–धाम सैक्टर–22 फरीदाबाद में प्रतिवर्ष सांय6 बजे विशेष जपमाला की जाती है, जो प्रतिदिन अलग–अलग उद्देश्यों व लोगों के लिए समर्पित है (जिसे स्वंय प्रभु दर्शन द्वारा समझाते हैं), उसके अनुरुप पवित्र बाईबिल से वचन भी प्रभु हमें बताते हैं, तथा विभिन्न संदेश व चंगाईयाँ भी प्राप्त होती हैं। इस महीने हुई पवित्र जपमाला के प्रतिदिन समर्पित उद्देश्यों, वचनों तथा मुख्य संदेशों व दर्शनों का यहाँ निम्नलिखित सूचि में उल्लेख किया गया है।*

तारीख, दिन	माला समर्पण का उद्देश्य	वचन	दर्शन, प्रमुख संदेश व आशीष
1, रविवार	उनके लिए जो अंधकार में हैं, शैतान के चंगुल में हैं और सच्चे ईश्वर से अनभिज्ञ हैं।	**लूकस 18:18-30**	प्रभु येशु प्रार्थना कर रहे, आशीष–उन्हें जो बीमार है, चलने में तकलीफ है, गुर्दे में पत्थरी है। आगे बढो, खुश रहो, दाखरस पात्र बड़ा हो रहा, रक्त से भरी पवित्र रोटी।
2, सोमवार	जीवन–धाम में आने वाले सभी विश्वासियों के विश्वास में वृद्धि व दृढ़ीकरण के लिए	**1 कुरिन्थि. 2:1-10**	"मेरे साथ चलोगे तो थकोगे नहीं", जो द्रुतसाक्षी वापस जायेंगे उनका बुरा हाल होगा, दूषित हवा–पानी से सावधान
3, मंगलवार	जो बहुत बीमार हैं, बिस्तर पर हैं, संक्रामक रोगों से पीड़ित हैं और जो बेहोशी की हालत में हैं	**मारकुस 7:24-30**	आशीष–बच्चों को, मरीज़ों को, जो पढाई में कमजोर हैं, जिनकी हड्डियाँ टूटी हैं, नशीली पदार्थों के सेवन से मुक्ति, विश्वास करो, एक मृतक को जीवनदान मिला।
4, बुधवार	अनाथों, निस्सहायों, बेघरों के लिए, और उनके लिए जो झुग्गियों में रहते हैं	**2 तिमथी 4:1-4**	प्रभु गरीबों को बुला रहे, आशीष दे रहे, विश्वास करो तो महिमा देखोगे, आशीष उन्हें जो जीवन–धाम आये हैं।
5, वीरवार	उन लोगों के लए जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और पवित्र आत्मा के बारे में नहीं जानते।	**रोमियों 3:1-20**	रोज बाईबिल पढ़ो और समझो, चिन्ता मत करो, पडोसी से समझौता करो, अनेक लोग नास्तिक होते जा रहे, आशीष–गुर्दे में पत्थरी, बाइबिल पढ़ने के लिए।
6, शुक्रवार	अशान्त परिवारों, राज्यों व देशों के लिए जहाँ समझौता नहीं हो पा रहा, वहाँ शान्ति कायम हो।	**मारकुस 9:14-29**	जहाँ शान्ति है वहाँ ईश्वर है, अनेक परिवारों को शान्ति दी, पवित्र आत्मा से प्रार्थना करो, वेदी के सामने से सीढ़ी स्वर्ग तक ऊपर जा रही और लोग उस पर चढ़ रहे।
7, शनिवार	सभी मृतक आत्माओं के लिए जो अधोलोक में मुक्ति की राह देख रहे हैं।	**1 कुरिन्थि. 15:1-23**	बच्चे का वरदान, नये घर का दान, येशु साथ प्रार्थना कर रहे, अनेक शव जो गले नहीं हैं, आत्माँओं की मुक्ति।
8, रविवार	कैन्सर, एड्स, टी.बी. और अन्य जानलेवा बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए	**प्रेरित 17:24-31**	पोलियो–ग्रसित बच्चे को आशीष, माला विनती करो, आराधना करो, शान्ति मिले, स्वर्गदूत नाच रहे, कबूतर।
9, सोमवार	सभी चर्मरोगियों के लिए विशेषकर कुष्ट रोगियों के लिए और युवाओं के लिए जो इन रोगों से पीड़ित हैं।	**लूकस 14:1-6**	अनेक कोढ़ी निस्सहाय बैठे हुए, दुर्घटना से बचा रहे, शान्ति दे रहे, रोगी और एक बच्चे को आशीष, बाइबिल।
10, मंगलवार	सभी नवयुवकों, युवतियों के लिए कि वह पवित्रता व आज्ञाकारिता, प्रार्थना व ईश वचन में आगे बढ़ें।	**स्तोत्र 47**	हज़ारों अनाथ बच्चे, अनेक प्रार्थना करना नहीं जानते, जागते रहो, स्तुति करते रहो, आशीष बच्चों को, क्रूस।
11, बुधवार	हज़ारों गरीबों के लिए जों सड़कों, झुग्गी–झोपड़ियों में रहते हैं जिनकी आवश्यकताँए पूरी नहीं होतीं।	**1 कुरिन्थि. 3:1-9**	अनेकों को यहाँ आकर नये घर मिले, शान्ति मिली, आशीष –बुजुर्ग व्यक्ति, घायल, इन्फेक्शन, बाइबिल पढ़ो।
12, वीरवार	सभी विकलाँगों, पोलियो–ग्रसित और लाचार बच्चों व बड़ों के लिए	**मारकुस 5:21-43**	अनेकों विकलांगों को चंगाई मिली पर विश्वास टूट गया, चिन्ता न करो, आशीष–मरीजों को, माँ मरियम खडी।
13, शुक्रवार	सभी बिखरे परिवारों के लिए, निराशा में पड़े दम्पत्तियों, नाजायज़ सम्बन्ध रखने वालों के लिए	**मत्ती 19:1-11**	अवैध सम्बन्धों के कारण अनेक बीमार, अनेक मर गये, पाप बढ़ रहा, विश्वास करो, माँगो मिलेगा, रोगी को आशीष।
14, शनिवार	अनाथों, विधवाओं व तिरस्कृत वर्ग के लोगों के लिए तथा जो संस्थाँए ऐसे लोगों की सेवा करती हैं	**2 तिमथी 4:1-5**	अनेक अनाथ बच्चे भटक रहे, दृढ़ बनो, शान्ति मिले, बाइबिल पढ़ने पर समझने की आशीष, दुर्घटना से बचाव।
15, रविवार	जो प्रभु के दिन को पवित्र नहीं मानते, पवित्र मिस्सा बलिदान के प्रति श्रद्धा–भक्ति नहीं रखते।	**1कुरिन्थि. 11:23-34**	परिवारों को शान्ति, वचन पर विश्वास करो, रोगी को आशीष, ऑपरेशन से बचाव, फूलों की वर्षा, माँ मरियम।
16, सोमवार	बेरोज़गारों के लिए, जो अपने परिवार का निर्वाह नहीं कर पाते, बन्द दुकानों, कारखानों के लिए	**सूक्ति 16:1-9**	अनेक लोगों को ज़रूरत से अधिक दिया, बढ़िया नौकरी दी, चिन्ता मत करो, विश्वास के साथ प्रार्थना करो, पढ़ने की कृपा, रोगी को आशीष, पवित्र आत्मा की वर्षा हो रही।
17, मंगलवार	जो भ्रूण हत्या जैसा घोर पाप करते, करवाते या समर्थन देते हैं, सभी अस्पतालों के लिए।	**मत्ती 6:25-34**	माँ रो रही, प्रभु अनेक बच्चों को लेकर खड़े, मृतक बच्चों की आत्मा रो रही, भ्रूण हत्या न करो, रोगी, घर में शान्ति।
18, बुधवार	सभी किसानों के लिए, बाढ, अकाल, भूकम्प, तूफान इत्यादि से पीडित लोगों व नष्ट हुई फसल के लिए।	**योब 38:25-41**	अकाल/बाढ़ ग्रसित इलाकों में फसल बर्बाद हुई, सै–9 में भीड़, पैशाचिक शक्ति से मुक्ति, आशीष–लड़की, क्रूस।
19, वीरवार	अन्धे, बहरे, गूँगों के लिए	**मत्ती 15:19-31**	अनेकों को चंगा किया पर कितने अब भी विश्वास करते हैं? प्रार्थना करो, आशीष– रोगी, बच्चा, पत्थरी, शान्ति।

"सबों के साथ शान्ति बनाये रखें और पवित्रता की साधना करें। इसके बिना कोई ईश्वर के दर्शन नहीं कर पायेगा।" (इब्रानियों12:14)

20, शुक्रवार	सभी राजनैतिक नेताओं, मंत्रियों, अधिकारियों के लिए, भारत सरकार के लिए	**स्तोत्र 125**	बाईबिल रोज़ पढ़ो,अनेक नेतागण सच्चाई जानते हुए भी अनदेखा कर रहे, साँस की बीमारी, माँ मरियम।
21, शनिवार	सभी डॉक्टरों व नर्सों के लिए जिससे वे सच्चाई, ईमानदारी से रोगियों की निःस्वार्थ सेवा करें।	**दानिएल 12:1-4**	फूलों की वर्षा, मछली, प्रभु हाथ पसारे खड़े, आशीष, शान्ति, माँ मरियम खडी, दिये बुझ रहे, सफेद क्रूस।
22, रविवार	सभी नवयुवकों, युवतियों के संरक्षण के लिए जो काम करने व पढ़ने के लिए घर से दूर गये हैं	**स्तोत्र 78:1-8**	रोटी रक्त–रंजित प्रभु के हाथों में, सीढ़ियाँ, प्रभु सिंहासन पर बैठे, आत्मा व फूलों की वर्षा, शान्ति, माँ आशीष दे रही।
23, सोमवार	जीवन–धाम के परिवार के लिए, उसमें नियुक्त सभी प्रषितों व उनके परिवारों के लिए	**लूकस 7:36-50**	जागते रहो, बन्द दरवाज़ा खुल रहा, मछली, आशीष, सफेद छतरी, कुँआ, सफेद क्रूस, हाथ में प्रकाश।
24, मंगलवार	कलीसिया के सभी विश्वासियों, चुने हुए धर्मी व्यक्तियों, धर्म–प्रचारकों व अभिषिक्तों के लिए।	**मारकुस 7:31-37**	कबूतर की चोंच में टोकरी का हैण्डल, शान्ति, बाईबिल खुली हुई, माँ मरियम और प्रभु येशु कुछ आपस में फुसफुसा रहे।
25, बुधवार	नशीली पदार्थों का सेवन करने वाले लोगों के लिए तथा जो इनके सेवन से बीमार है।	**मत्ती 20:24-28**	अनेक सन्त साथ प्रार्थना कर रहे, करुणामय येशु हमारे साथ प्रार्थना कर रहे, ध्यान देना, शान्ति।
26, वीरवार	विश्वासियों के लिए जो सच्चा विश्वास खो बैठे हैं, जो दूसरों को झूठी या गलत शिक्षा देते हैं, जो भ्रान्त धारणाओं के कारण कलीसिया से अलग हो गये हैं।	**रोमियों 3:9-20**	गिरने से बचाव, गिरने से घायल व्यक्तियों को आशीष, आशीष–बुख़ार पीड़ित, सभी बच्चों को आशीष, पवित्र आत्मा की वर्षा, शान्ति।
27, शुक्रवार	कलीसिया की एकता के लिए, आपसी प्रेम बढ़े–सच्चा प्रेम करें, ख्रीस्त के सच्चे अनुयायी बनें।	**मत्ती 13:24-30**	बाईबिल रोज़ पढ़ो, प्रभु पर विश्वास करो, बच्चे को आशीष, निस्सन्तान दम्पत्ति को बच्चे का दान।
28, शनिवार	वृद्ध माता–पिताओं के लिए विशेषकर जो बीमार, निस्सहाय व अकेले हैं।	**मत्ती 11:25-27**	पोलियो ग्रसित बच्चों को आशीष, आशीष– जीवन–धाम में आये बुजुर्ग व्यक्तियों को, प्रभु के हृदय से प्रकाश।
29, रविवार	देश की सीमा पर तैनात जवानों के लिए तथा उनके संरक्षण के लिए।	**योब 39:1-18**	बाईबिल रोज पढ़ो, शान्ति, प्रार्थना करो, आशीष–जिन्होंने परम पसाद ग्रहण किया, माँ मुकुट पहने, बच्चों के साथ।
30, सोमवार	जो विभिन्न वाहनों को चलाते हैं, जो दुर्घटना के शिकार हुए और घायल होने पर अस्पताल में भर्ती हैं	**सूक्ति 1:20-23**	आशीष– बच्चे को, दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति, चिन्ता मत करो, माला विनती करो, सामानों से भरी टोकरी।
31, मंगलवार	जीवन–धाम तथा वहाँ आने वालों की रक्षा के लिए, कि वे विश्वास व प्रेम में दृढ़ बनें, ख्रीस्त के सच्चे साक्षी बनें, वचन पालन करने में सक्षम हों ।	**योहन 6:59-71**	आशीष– बच्चे को, पवित्र आत्मा की वर्षा, जीवन–धाम स्वर्णाक्षरों में लिखा, गिरने से बचाव, खुली बाइबिल, सफेद छतरी, क्रूस, पैशाचिक शक्ति से मुक्ति, शान्ति।

"जीवन-धाम" के जीवित साक्ष्य

प्रभु ने मेरे रोगों को अपने ऊपर ले लिया... पैशाचिक शक्ति से, शरीर दर्द से मुक्त किया

येशु की स्तुति हो! येशु का धन्यवाद! मैं, विजय(उम्र–20 वर्ष), पिछले 4 सालों से शरीर दर्द और मुख्य रूप से सिर दर्द व पेट दर्द से परेशान था। शुरूआत 4 साल पहले पेट में सूजन से हुई थी। पेट में गाँठ बन गई और डॉक्टर ने रसौली (Ulcer) बता दिया था। इस से दिमाग में चिन्ता और बाद में सिर दर्द शुरू हो गया। बिहार में और फरीदाबाद में कई डॉक्टरों को दिखाया व इलाज पर 40-50 हज़ार रूपये तक लगा दिये। पर मुझे कोई आराम नहीं मिला। दर्द से मैं तड़पता रहता था।

एक दिन किसी के बताने पर मुझे जीवन–धाम में चल रही रोग–चंगाई प्रार्थना के विषय में पता चला। ढाई साल से मैं यहाँ प्रार्थना में शामिल हो रहा हूँ। पहली बार में ही मुझे दर्द में आराम मिल गया था।2 साल से मैंने दवा लेनी ही छोड़ दी। अब न तो मुझे शरीर में दर्द है, न ही पेट में दर्द और न ही सिर में दर्द। प्रभु ने जल्द ही मेरे विश्वास को मेरी प्रार्थना सुन कर दृढ़ कर दिया। साथ ही में पिछले 4 साल से अपना दायाँ हाथ ऊपर नहीं उठा पाता था। अब वह भी बिना किसी तकलीफ के उठा लेता हूँ।

ii) मैं पिछले 4 साल से पैशाचिक शक्ति के चंगुल में फँसा था। रात को मुझे डरावने सपने आते थे और कभी–कभी मुझे दौरे भी पड़ते थे। मैं डर के मारे कभी अकेला रात को सो नहीं पाता था। लेकिन यहाँ आने के बाद से मैं पूर्ण रूप से पैशाचिक शक्ति से मुक्त हो गया। प्रभु की दया से मुझको नया जीवन मिला, शक्ति मिली, चंगाई मिली। उसको कोटि–कोटि बार धन्यवाद। ***विजय,*** *फरीदाबाद*

"सन्ध्या होने पर लोग बहुत-से अपदूत-ग्रस्तों को येशु के पास ले आये। येशु ने शब्द मात्र से अपदूतों को निकाला और सब रोगियों को चंगा किया। इस प्रकार नबी इसायस का यह कथन पूरा हुआ- उसने हमारी दुर्बलताओं को दूर कर दिया और हमारे रोगों को अपने ऊपर ले लिया।" (सन्त मत्ती 8:16-17)

प्रभु येशु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। इस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे...।" (मत्ती 5:44-45)

"आप लोगों के लिए जो विरासत स्वर्ग में रखी हुई है, वह अक्षय, अदूषित तथा अविनाशी है। आपके विश्वास के कारण ईश्वर का सामर्थ्य आपको उस मुक्ति के लिए सुरक्षित रखता है, जो अभी से प्रस्तुत है और समय के अन्त में प्रकट होने वाली है।" (1पेत्रुस 1:4-5)

शादी के कई वर्षों बाद इन निस्सन्तान दम्पत्तियों को सन्तान का दान मिला

प्रभु ने उनके बहरे कानों को खोल दिया, वे ईश्वर की स्तुति सुनने लगे!

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
f) अध्याय 18-20

प्रस्तुत प्रश्न **सन्त लूकस** के सुसमाचार के अध्याय **18 से 20** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से (**क, ख, ग और घ**) चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाले वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) इस लोक के स्त्री और पुरूष से परलोक के स्त्री–पुरूष कैसे भिन्न हैं?
क) परलोक में स्त्री–पुरूष विवाह नहीं करते।
ख) इस लोक के सभी स्त्री–पुरूष परलोक में ईश्वर की सन्तति बन जाते हैं।
ग) परलोक में पहुँचे सभी स्त्री–पुरूष स्वर्गदूत समान बन जाते हैं।
घ) इस लोक के विवाहित स्त्री–पुरूष परलोक में उसी सम्बन्ध से बुलाये जाते हैं।

2) ज़केयुस कौन था?
क) वह येरीखो का एक प्रमुख और धनी व्यक्ति था।
ख) वह बेईमान और पापी था।
ग) वह इब्राहीम की सन्तान था जिसके घर में प्रभु येशु आये।
घ) वह छोटे कद का एक नाकेदार था।

3) न्यायकर्ता और विधवा के दृष्टान्त से आप क्या पाठ सीखते हैं?
क) हमें नित्य प्रार्थना करते रहना चाहिए और कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।
ख) दुष्ट और विधर्मी विधवाओं की याचना को ही सुनते हैं।
ग) ईश्वर अपने लोगों से प्रेम करता, उन्हें न्याय दिलाता और उनके प्रति करूणामयी है।
घ) अपनी इच्छापूर्ति के लिए हमें किसी के भी नाक में दम करते रहना चाहिए।

4) प्रभु येशु को पकड़वाने के मक्सद से इन में से किन विषयों पर और किसने प्रश्न किये?
क) कैसर को कर देना, शास्त्रियों के गुप्तचरों ने
ख) पुनरूत्थान का प्रश्न, सदूकियों ने
ग) प्रभु के अधिकार का प्रश्न, शास्त्रियों और महायाजकों ने
घ) मसीह का दाऊद की सन्तति होने का प्रश्न, महायाजकों ने

5) हिंसक असामियों के दृष्टान्त के अनुसार नौकर, असामी और दाख़बारी का स्वामी कौन है?
क) नौकर–फरीसी, असामी–नबी, दाख़बारी का स्वामी–येशु
ख) शिष्य, शास्त्री और महायाजक, येशु
ग) स्वर्गदूत, नरकदूत, पिता परमेश्वर
घ) नबी, शास्त्री और महायाजक, पिता परमेश्वर

6) प्रभु येशु ने लोगों से शास्त्रियों से सावधान रहने को क्यों कहा?
क) शास्त्री बाज़ारों में घूमते हुए किसी को भी नियम तोड़ते हुए पकड़ लेते हैं।
ख) वह विधवाओं की सम्पत्ति चट कर जाते हैं।
ग) वह दिखावे के लिए मौन रहकर लम्बी–लम्बी प्रार्थनाँए करते हैं।
घ) वह भोजों में प्रथन स्थानों पर बैठना पसन्द करते हैं पर स्वंय किसी को सम्मान नहीं देते।

7) फरीसी और नाकेदार के दृष्टान्त में पापी कौन था और बाद में मन्दिर में प्रार्थना करने से कौन पापमुक्त हो गया?
क) नाकेदार और फरासी, नाकेदार
ख) फरासी, नाकेदार
ग) फरासी, फरासी और नाकेदार
घ) नाकेदार और फरासी, नाकेदार और फरासी

8) अपने दुःखभोग की तीसरी भविष्यवाणी में प्रभु ने अपने बारे में शिष्यों से क्या कहा?
क) कि यहूदी उन पर थूकेंगे
ख) कि गैर–यहूदी उन पर अत्याचार करेंगे, उन्हें कोड़े लगायेंगे
ग) कि उनके शिष्य उन्हें अकेला छोड़ कर भाग जायेंगे
घ) कि गैर–यहूदी उनका उपहास करेंगे

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

6) लूकस रचित सुसमाचार
e) अध्याय 15-17

1) क) और ग) (15:18-24; 16:20-23)
2) क), ख) और ग) (17:27-28)
3) क), ग) और घ) (15:4-7, 10, 24, 32)
4) ख) और ग) (16:9, 10, 12)
5) ख), ग) और घ) (17:22-24, 34-35)
6) ख) और ग) (15:22-23)
7) ग) और घ) (17:3-4)
8) ख) (17:15-17)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

(Our website address)
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दुःखी.....हैं?
क्या आप रोगी.....हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम' 696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"मैं यह चाहता हूँ कि मसीह को जान लूँ, उनके पुनरूत्थान के सामर्थ्य का अनुभव करूँ और मृत्यु में उनके सदृश बन जाऊँ, जिससे मैं किसी तरह मृतकों के पुनरूत्थान तक पहुँच सकूँ।" (फिलिप्पियों 3:10-11)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.